विभिन्न आख्यान

पद्मपुराण में चित्रगुप्त का न्याय

पद्मपुराण के सृष्टि खण्ड के 61वें अध्याय में सेतु बाँधने के कर्मफल के प्रसंग में चित्रगुप्त के न्याय का विवरण मिलता है कि उनकी न्यायप्रियता से एक चोर को विष्णुलोक की प्राप्ति हो गयी। वह चोर चोरी करने गया। रास्ते में जंगल में एक जलाशय पड़ता था, उस चोर ने नाव के आकार का बाँध बना दिया । उस बाँध से अनेक लोगों ने जलाशय को पार किया । यह एक पुण्यकर्म था । मरने पर चोर यमलोक गया । साधारण पुण्य के फलस्वरूप फिर जन्म लेना पड़ा, उसने बारह साल तक राज ऐश्वर्य प्राप्त किया, अनेक सेतुओं का निर्माण किया । दूसरी बार यमलोक जाने पर चित्रगुप्त जी ने प्रसन्न होकर अपना न्याय सुनाया कि वह विष्णु लोक प्राप्त करें । चित्रगुप्त की उक्ति है –

कर्मणा मनसा पूतो विष्णुलोकं स गच्छतु।

(पद्मपुराण सृष्टि. 61।36)

भगवान चित्रगुप्त के न्याय विधान से उस चोर ने विष्णुलोक प्राप्त किया।

चित्रगुप्त के न्याय से राजा वीरभद्र की सद्गति

नारद पुराण के पूर्व भाग के प्रथम पाद के बारहवें अध्याय में राजा भगीरथ और धर्मराज के सम्वाद में राजा वीरभद्र और उसके मंत्री बुद्धि सागर के चित्रगुप्त के निष्पक्ष और पुण्यमय निर्णय के अनुसार धर्मविमान पर आरूढ़ होकर सद्गति प्राप्त करने का वर्णन उपलब्ध होता है ।

सगरकुल में उत्पन्न राजा भगीरथ का साक्षात् दर्शन करने के लिए स्वयं धर्मराज आये । राजा भगीरथ ने उनका स्वागत सत्कार करने के बाद पूछा कि कैसे लोग आपके द्वारा सम्मानित होते हैं । धर्मराज ने धर्माधर्म का यथार्थ वर्णन करते हुए कहा कि जो स्वयं अथवा दूसरे के द्वारा तालाब बनवाता है। उसके पुण्य की संख्या बताना असम्भव है। धर्मराज ने कहा कि गौड़ देश में वीरभद्र नाम एक विख्यात राजा था । वह बड़ा प्रतापी था। उसकी रानी का नाम चम्पकमञ्जरी था । एक दिन विभिन्न आख्यान राजा वीरभद्र मंत्री आदि के साथ शिकार खेलने के लिए एक बहुत बड़े वन में गया । राजा थक गया था । राजा ने एक छोटी सी सूखी पोखरी देखी । राजा प्यासा था। बुद्धिसागर मंत्री राजा को प्यासा देखकर उसे पानी पिलाने की चिन्ता हुई। उसने पोखरी में एक हाथ का गड्ढा खोदकर पानी प्राप्त किया और राजा तथा बुद्धिसागर दोनों ने जल पीकर तृपित प्राप्त की । राजा की आज्ञा से मंत्री बुद्धिसागर ने पोखरी को सरोवर में बदल दिया। सब प्यासे जीव और थके पथिक उत्तम जल से तृप्त होने लगे । बुद्धिसागर की मृत्यु हो गयी । धर्मराज ने भगीरथ से कहा कि वह मंत्री मेरे लोक में गया । मैंने चित्रगुप्त से धर्म पूछा। चित्रगुप्त ने कहा कि यह मंत्री धर्म का उपदेश राजा को करता था, इसलिए धर्मविमान पर चढ़ने का अधिकारी है ।

तदर्थं तु मयापृष्ठो धर्मोधर्मलिपिकरः।
चित्रगुप्तस्तु तत्कर्म मह्यं सर्वं न्यवेदयत्।।

(नारद पुराण पूर्व 12।81)

इसके बाद राजा वीरभद्र की भी मृत्यु हो गयी। वह भी मेरे लोक में आया । धर्मराज ने भगीरथ से कहा कि मेरे पूछने पर चित्रगुप्त ने राजा के लिए भी पोखरा खुदाने से होने वाले धर्म की बात बतायी। राजा वीरभद्र ने भी अपने मंत्री की ही तरह धर्मविमान पर चढ़ने का पुण्यफल प्राप्त किया । इस तरह चित्रगुप्त की सम्मति से दोनों ने सद्गति पायी । भगवान चित्रगुप्त पुण्यात्मा की सद्गति प्राप्ति के निष्पक्ष व्यवस्थापक हैं।

चित्रगुप्त और भद्रशील का आख्यान

नारदपुराण के पूर्व भाग के प्रथम पाद के तेईसवें अध्याय में भद्रशील के सम्बन्ध में चित्रगुप्त की धर्म पूर्ण सम्मति उपलब्ध होती है । इस प्रसंग में एकादशी व्रत करने वाले भद्रशील के पुण्य का निरूपण करते समय स्वयं चित्रगुप्त ने अपनी सम्मति दी है कि एकादशी को उपवास करने वाला मनुष्य सब पापों से मुक्त होता है । एकादशी व्रत भगवान विष्णु को प्रिय है, एकादशी व्रत के पुण्यफल में आस्था रखने वाले श्रीचित्रगुप्त की वैष्णवता प्रकट होती है । भद्रशील एकादशी व्रत के द्वारा भगवान विष्णु को प्रसन्न करते थे । वे गालव मुनि के पुत्र थे। गालव नर्मदा तट पर निवास करते थे । भद्रशील को अपने पूर्व जन्म के वृतान्त का स्मरण था । अपने पुत्र को एकादशी व्रत और भगवान विष्णु की भक्ति में तत्पर देख कर गालव मुनि ने पूछा कि सत्संग होने पर भी पूर्व पुण्य की अधिकता से ही मनुष्य में भगवद्भक्ति का उदय होता है, तुम्हारी अद्भुत स्थिति देखकर मैं विस्मय में पड़ गया हूँ । भद्रशील ने कहा कि "मैं जातिस्मर हूँ, मुझे पूर्व जन्म के वृतान्त का स्मरण है। मैं पूर्व जन्म में चन्द्र वंशी राजा था, मेरा नाम धर्म कीर्ति था । महर्षि दत्तात्रेय ने मुझे शिक्षा दी थी । एक दिन शिकार खेलने की रुचि

से मैं नर्मदा तट पर आया । नर्मदा तट के निवासियों को मैंने एकादशी व्रत करने के लिए निराहार रहकर रात जागरण करते देखा । मेरी सेना पीछे रह गयी थी । मैं भी अकेला वहाँ जागरण करता रहा और जागरण समाप्त होने पर मेरी मृत्यु हो गयी । मैं यमलोक में गया । यमराज ने श्री चित्रगुप्त से मेरे लिए दण्ड विधान पूछा । चित्रगुप्त जी ने कहा "एकादशी के दिन यह निराहार रहा है । वहाँ उपवास और जागरण करके यह सर्वथा निष्पाप हो गया है।" मैंने अपने पुण्य से इन्द्रलोक प्राप्त किया और अब भूलोक में मैंने आपके पवित्र कुल में जन्म लिया । इस तरह भद्रशील ने अपने पिता गालव की जिज्ञासा शान्त की। उपर्युक्त सन्दर्भ में चित्रगुप्त का उल्लेख है ।

एममु क्तश्चित्रगुप्तो धम्रराजेन सत्तम।
चिरं विचारयामास पुनश्चेदमभापत।।
असौ पापरतः सत्यं तथापि शृणु धर्मम्।
एकादश्यां निराहारः सर्वपापै : प्रमुच्यते।।
एष रेवातटे रम्ये निराहारो हरे र्दिने।
जागरं चोपवासं च कृत्वा निष्पापतां गतः।।
यानि कानि च पापानि कृतानि सुबहूनि च।
तानि सर्वाणि नष्टानि ह्युपवासप्रभवतः।।

(नारद पुराण पूर्व 23 |68–71)

चित्रगुप्त की पद प्रतिष्ठा

धर्मराज पुरी में चित्रगुप्त के न्यायाधीश पद की प्रतिष्ठा का अभिप्राय यह है कि वे न्यायब्रह्म, अन्तर्यामी परमेश्वर निरन्तर प्राणिमात्र के अशुभ कर्म और शुभ कर्म का फल निश्चित करते रहते हैं, इस तरह समग्र सृष्टि के संचालन में उनका योगदान असाधारण और परम उपयोगी है। पद्मपुराण के उत्तर खण्ड के 67वें अध्याय में मृदगल मुनि का प्रसंग है। वे यमराज की सभा में गए थे । वहाँ उन्होंने भगवान चित्रगुप्त का धर्माधिकारी लेखक के रूप में दर्शन किया था । उनका कथन है –

धर्माधिकारिभिश्चात्र चित्रगुप्तादिलेखकैः।

(पद्मपुराण उ.67 |14)

शिवपुराण की कोटिरूद्रसंहिता में श्री चित्रगुप्त का उल्लेख है। गोकर्ण में गणनायक रूप से स्थापित शिवलिंग हैं । ब्रह्म, विष्णु, महेन्द्र, विश्वेदेव तथा मरूदगण, आदित्य वसु, अश्विनीकुमार, चन्द्रमा, तारागण विमान से आये पार्षद सहित ये समस्त देवगण पूर्वद्वार का सेवन करते हैं। यम, मृत्यु, चित्रगुप्त और अग्निदेवता पितरों और रूद्रों के साथ दक्षिण द्वार का सेवन करते हैं।

विष्णुर्ब्रह्मामहेन्द्रश्च विश्वेदेवा मरूद्गणाः।
आदित्यावसवो दस्रौशशांकश्च सतारकः।।
एते विमानगतयो देवाश्च सह पार्षदैः।
पूर्वद्वारं निषेवन्ते तस्य वै प्रीतिकारणात्।।
यमो मृत्यु : स्वयं साक्षाच्चित्रगुप्तश्च पावकः।
पितृभि : सह रूद्रैश्च दक्षिणद्वारमाश्रितः।।

(शिवपुराण कोटिरूद्रसंहिता 8 |15–17)

गर्भ में स्थित होने वाले , उत्पन्न होने वाले, युवा, मध्यम, स्त्री पुरूष और नपुंसक आदि समस्त जीवों को यह जानना चाहिए कि सम्पूर्ण जीवों के शुभ अशुभ कर्म का विचार चित्रगुप्त आदि तथा वशिष्ठ आदि मुनियों द्वारा किया जाता है– ऐसा कथन शिवपुराण की उमासंहिता में उपलब्ध होता है।

गर्भस्थैर्जा यमानैश्च बालै स्तरूणमध्यमै :।
स्त्रीपुन्नपुन्सकं जीवै र्ज्ञातव्य सर्वजन्तुषु।।
शुभाशुभं फलं चात्र देहिनां सर्वविचार्यते।
चित्रगुप्तादिभिस्सर्वै र्वसिष्ठ प्र मुखै स्तथा ।।

(शिवपुराण उमा संहिता 7 |2–3)

शिवपुराण की उमासंहिता में ही वर्णन है कि यमराज पापियों को ललकारते हैं पर भगवान चित्रगुप्त धर्म वाक्यों द्वारा उन्हें सम्बोधित करते हैं, उन्हें सत्कर्म के अभिमुख करते हैं।

निर्भर्त्सयति चात्यन्तं यमस्तान् पापकर्मणाः।
चित्रगुप्तश्च भगवान् धर्मवाक्यै : प्र बोधयेत्।।

(शिवपुराण उमासंहिता 7 |59)

इसका आशय यह है कि भगवान चित्रगुप्त पापियों को निरन्तर पुण्याचरण की प्रेरणा देते रहते हैं । वे स्वंय सत्स्वरूप सर्वरक्षक परमात्मा हैं, इसलिए सदाचार का पथ प्रशस्त करना उनका स्वभाव है। भागवत धर्म है । वे साक्षात भगवान कहे गये हैं। अग्निपुराण में उल्लेख है कि मनुष्य के शुभ–अशुभ कर्म का निरूपण चित्रगुप्त करते हैं । धर्मात्मा पुण्यात्मा जीव का यमराज सत्कार करते हैं, पापी को दण्ड देते हैं। चित्रगुप्त पुण्य पाप के द्रष्टामात्र हैं, यम उनके न्याय के अनुसार आचरण करते हैं। यमराज के दूतों द्वारा मनुष्य यम के समक्ष ले जाया जाता है। मनुष्य उनका दर्शन करता है पर उसके शुभ–अशुभ कर्म की समीक्षा भगवान चित्रगुप्त का कार्य है ।

यमदूतैर्मनुष्यस्तु नीयते तं च पश्यति।
धर्मी च पूजयते तेन पापिष्ठस्ताड्य गृहे।
शुभाशुभं कर्म तस्य चित्रगुप्तो निरूपयेत्।।

(अग्निपुराण 369 |8–9)

Scanned with CamScanner

अग्निपुराण में ही चित्रगुप्त के न्यायविधान पर 371वें अध्याय में प्रकाश डाला गया है। इसमें उल्लेख है –

याम्यं मार्गं महाघोरं षडशीतिसहस्रकम्।
अन्नोदकं नीयमानो बान्धवैर्दत्तमश्नुते।।
यमं दृष्ट्वा यमोक्तेन चित्रगुप्तेन प्रेरितान।
प्राप्नोति नरकान्रौद्रान्धर्मी शुभपथैर्दिवम्।।

(अग्निपुराण 371।11–22)

यम के पास जाने वाला मार्ग 86 हजार योजन का होता है। बन्धवों के द्वारा दत्त अन्न, जल लेकर आतिवाहिक देह से जीव खाता है, यम का दर्शन करने पर यम द्वारा निर्दिष्ट और चित्रगुप्त द्वारा प्रेरित भीषण नरक प्राप्त करता है। धर्मात्मा शुभ पथ से स्वर्गलोक में जाता है और अपने पुण्य और सत्कर्म के अनुपात से स्वर्ग की सुख सुविधा का भोग करता है तथा सद्गति का सौभाग्य पाता है।

चित्रगुप्त भावना के पौराणिक स्तर पर यह विचार अपने आप में एक अत्यन्त खरा ध्रुव सत्य है कि भगवान चित्रगुप्त के न्याय विधान से प्राणी पाप नहीं कर सकता। न तो पापी उनका ध्यान कर सकता है और न उनका ध्यान करने वाला कभी पापी हो सकता है। यही कारण है कि न्यायब्रह्म चित्रगुप्त को पौराणिक वाङ्मय में सर्वलोकार्थचिन्तक और प्राणिमात्र के प्रति सम कहा गया है।

Scanned with CamScanner